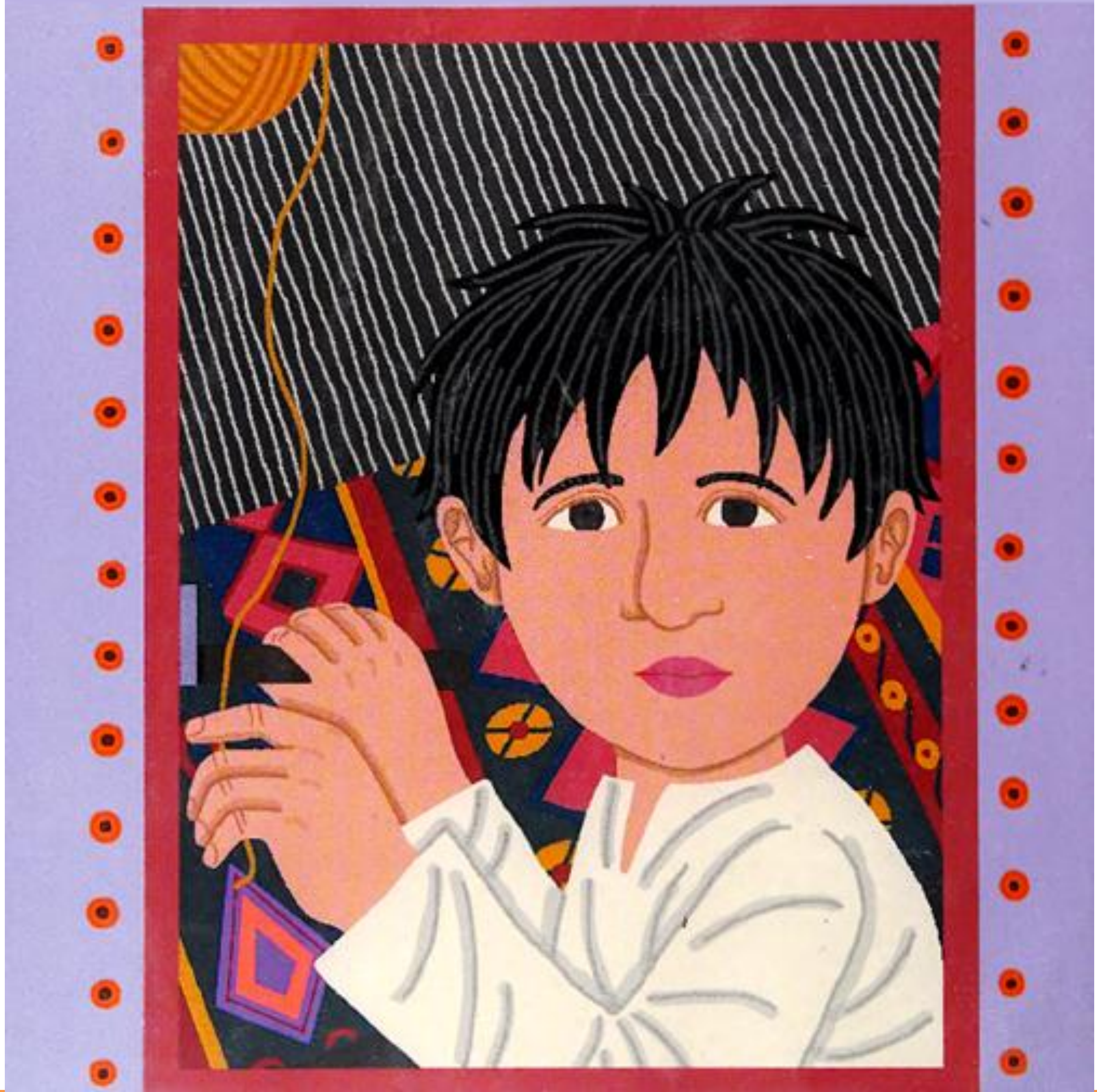
इकबाल मसीह

पाकिस्तान का एक बहादुर लड़का

जीनत विंटर



इकबाल मसीह

पाकिस्तान का एक बहादुर लड़का

जीनत विंटर



इकबाल मसीह (1982-1995)

इकबाल मसीह का जन्म पाकिस्तान में लाहौर के पास मुरीदके गाँव में हुआ था. जब वो केवल चार साल का था, तो उसके गरीब माता-पिता ने एक कालीन कारखाने के मालिक से बारह डॉलर उधार लिए थे. क़र्ज़ के बदले में, इकबाल एक बंधुआ मजदूर बन गया था. अब जब तक कर्ज नहीं चुकेगा तब तक हर दिन इकबाल को कालीन के करघे पर काम करना होगा. वो दिन में केवल बीस सेंट ही कमाता था.

जब इकबाल दस साल का हुआ तो पाकिस्तान के बंधुआ मुक्ति मोर्चे ने उसे मुक्त करवाया. अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद, इकबाल ने बहादुरी से बाल मज़दूरी के खिलाफ अपनी आवाज़ उठाई.

इकबाल के कटु अनुभवों की खबर दूर-दूर तक फैली. उसने अपनी कहानी बताने के लिए अपने घर से बहुत दूर तक की यात्रा की.

इकबाल ने स्टॉकहोम में एक अंतरराष्ट्रीय श्रमिक सम्मेलन में भाषण दिया. उसे बोस्टन में, रिबॉक ह्यूमन राइट्स फाउंडेशन की ओर से पुरस्कार मिला. संयुक्त मानव अधिकार के उच्चायुक्त ने इकबाल को "समकालीन गुलामी जिससे दुनिया के लाखों बच्चे प्रभावित थे के खिलाफ पाकिस्तान में लड़ाई के चैंपियन के रूप में सम्मानित किया."

इकबाल कानून की पढ़ाई करना चाहता था. ब्रैंडिस यूनिवर्सिटी ने उसे पूरी छात्रवृत्ति प्रदान की थी.

इकबाल को कालीन उद्योग के मालिकों से मौत की धमकी मिली. 16 अप्रैल, 1995 को जब वो दो चचेरे भाइयों से साथ अपने गांव में साइकिल की सवारी कर रहा था तब इकबाल की गोली मारकर हत्या कर दी गई. वो सिर्फ बारह वर्ष का था. उसकी मृत्यु की परिस्थितियाँ संदिग्ध थीं.

हम खतरों से बचने के लिए प्रार्थना न करें,

बल्कि उनका सामना करते समय निडर बने रहें.

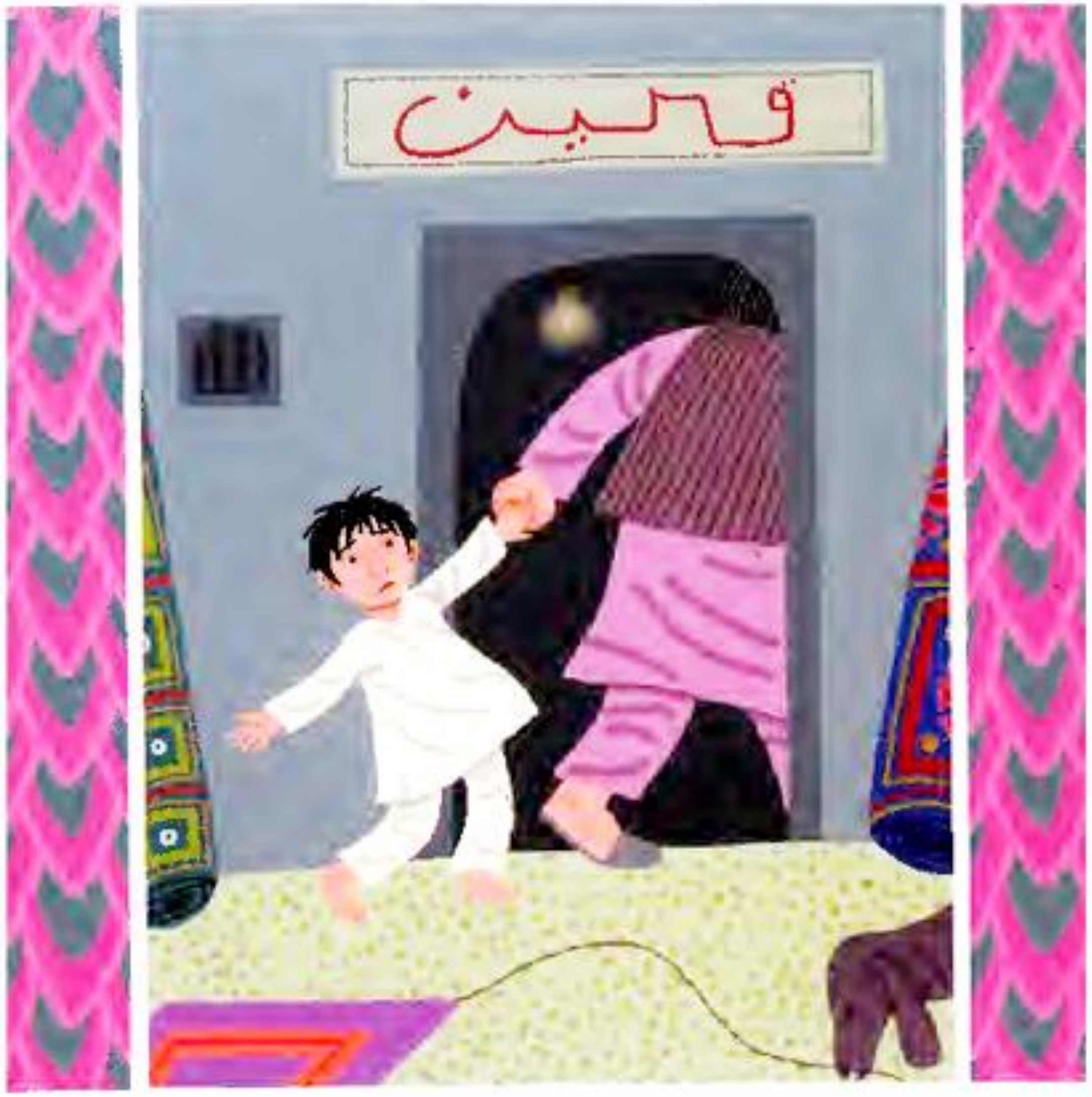
रविंद्रनाथ टैगोर





बारह डॉलर

जब तक उसे माता-पिता बारह डॉलर का कर्ज नहीं चुकाते तब तक चार साल के इकबाल को कालीन कारखाने में ही काम करना होगा. एक लड़के की आजादी की कीमत - सिर्फ बारह डॉलर थी!



"यहाँ पतंग मत लाना!" कालीन कारखाने के मालिक ने इकबाल को अंधेरी फैक्ट्री में खींचा. वहां एकमात्र खिड़की पर लोहे की छड़ें लगीं थीं.



इकबाल को एक चेन द्वारा करघे के साथ बाँध दिया गया, जिससे कि वो भागे नहीं.





इक़बाल ने अपने जैसे जंजीरों में बंधे बच्चों की कई कतारें देखीं. सभी अँधेरे में कालीन बुन रहे थे.

छोटी, लचीली उंगलियां जटिल नमूने बुन सकती थीं, इतने जटिल कि मालिक ने इकबाल को एक कालीन में अपनी पतंग का नमूना बुनते हुए तक नहीं देखा. उसके हाथ काम कर रहे थे, जबकि उसका दिमाग आसमान की सैर कर रहा था.



इकबाल अंधेरे घर में रहता है.

वो सूरज निकलने से पहले ही कारखाने में पहुँचता है,

और फिर वो वहां पूरे दिन काम करता है.

वो सूरज डूबने के बाद ही घर लौटता है.



एक रात घर लौटते हुए, इकबाल को दीवार पर एक नोटिस दिखा. क़र्ज़ के बारे में एक मीटिंग होने जा रही थी. वही क़र्ज़ जिसने इक़बाल जैसे बच्चों को गुलामी में झोंखा था.



इकबाल मीटिंग में गया. उसे पता चला कि अब पेशगी (क़र्ज़) गैरकानूनी हो गई थी और - सभी कर्ज़ों को माफ कर दिया गया था.

वो अब कालीन फैक्ट्री मालिक का गुलाम नहीं था.

अब इकबाल मुक्त था!



फिर वो दौड़ता हुआ अंधेरे कारखाने में गया, उसने नोटिस लहराया और वो चिल्लाया.

"अब तुम सब स्वतंत्र हो! हम सब मुक्त हैं!"



गुलामी से मुक्त इकबाल ने फिर स्कूल जाना शुरू किया. वो पढ़ाई में बहुत तेज़ था और उसने बड़ी तेज़ी से तरक्की की. वो एक बहादुर लड़का था इसलिए उसने अपने जैसे बंधुआ बच्चों के हितों के लिए अपनी आवाज़ बुलंद की. फैक्ट्री मालिकों की धमकियाँ इस दस वर्षीय लड़के को डरा नहीं पाईं.



इकबाल पूरे पाकिस्तान में कालीन कारखानों में गया.

उसने 3,000 से अधिक बंधुआ बच्चों में स्वतंत्रता का संदेश फैलाया.

फिर वो अपना सन्देश फ़ैलाने के लिए समुद्र पार करके अमेरिका में भाषण देने गया.

"मैं पाकिस्तान में वही करना चाहता हूँ जो अब्राहम लिंकन ने अमरीका में किया. मैं बच्चों को गुलामी से मुक्त करवाना चाहता हूँ."





जब वो पाकिस्तान वापिस लौटा तब धमकियाँ फिर से शुरू हो गईं.

फिर भी बारह साल का लड़का उनसे डरा नहीं.

इकबाल अब आज़ाद था.

फिर एक दिन जब वो साइकिल चला रहा था तब किसी ने गोली मारकर उसकी जान ले ली.

अंतिम संस्कार में, पाकिस्तान के इस बहादुर लड़के के लिए 800 लोगों ने अपने आसूं बहाए.

अंत

